वेद का काल-निर्णय

प्रामाणिक साक्ष्यों के आभाव में वेदों के रचना-काल का निर्णय करना अत्यन्त कठिन कार्य है। इसी कारण मनीषियों के मध्य इस विषय में प्रचुर मतभेद हैं। काल-निर्णय का प्रयास करने वाले विद्वानों को तीन श्रेणियों में रखा जा सकता है। प्रथम वर्ग में वे वैदिक और वेदभक्त आते हैं, जिनके लिए वेद अनादि, अपौरुषेय और नित्य हैं। वे इस विषय में विचार करना ही व्यर्थ समझते हैं। उनके मन का कुतूहल केवल यह जानकर ही समाप्त हो जाता है कि जिस दिन सृष्टि का आरम्भ हुआ, तभी ऋषियों के हृदय में वेदों का भी अविर्भाव हो गया। दूसरी श्रेणी उन पाश्चात्य विद्वानों की है, जिन्होंने वेद के काल-निर्णय की दृष्टि से कुछ पूर्वाग्रह पाल रखे हैं। वस्तुत: ईसाई मत के अनुसार सम्पूर्ण सृष्टि पिछले आठ हजार वर्षों में हुई, इसलिए वे खींच-तानकर वेदों का रचना-काल आज से ४-५ हजार वर्ष पूर्व ही निश्चित कर देना चाहते हैं। तीसरे वर्ग में वे अनुसन्धान प्रेमी हैं, जो शोध के समय आस्तिकता की सीमाओं को बाधक नहीं मानते। वे अनादिता के पक्ष में इसलिए नहीं हैं, क्योंकि इससे अध्ययन-परम्परा प्रशस्त नहीं होती। इन विद्वानों ने ज्योतिष और भूगर्भशास्त्र इत्यादि की अधुनातन खोजों के आधार पर वेद के रचनाकाल की समस्या को सुलझाने का प्रयत्न किया है।

वेदों के रचना-काल की पूर्व-सीमा का हमें कोई ज्ञान नहीं है। अन्तिम सीमा की दृष्टि से बुद्ध का काल माना जा सकता है। बुद्ध ने यज्ञों का प्रबल विरोध किया था। इससे विद्वान् यह निष्कर्ष निकालते हैं कि तब तक संभवत: यज्ञ-प्रक्रिया का सम्पूर्ण विकास हो चुका होगा। यज्ञों के विधि-विधान का विपुल विकास कल्पसूत्रों में हुआ है जिनकी रचना सूत्र-काल में हुई। इसके अतिरिक्त सन् १९०७ ई॰ में एशिया माइनर के बोघाजकोई नामक स्थान से प्रो॰ ह्यूगो विंकलर को एक शिलालेख प्राप्त हुआ जिसमें १४०० ई॰ पूर्व के प्रारम्भ में मितानी और हित्ती लोगों के मध्य हुई किसी सन्धि का उल्लेख है। इसमें, साक्षी रूप में अन्य देवताओं के साथ मित्र, वरुण, इन्द्र और नासत्या (अश्विन) देवों का भी उल्लेख है। इससे अनुमान किया जाता है कि तब तक अर्थात् १४०० ई॰ पूर्व तक मूल वैदिक संहिताओं की रचना हो चुकी थी।

वेद के रचना-काल के विषय में प्रचलित प्रमुख मतों का परिचय इस प्रकार है :

1. मैक्समूलर का मत

बुद्ध के अविर्भाव को आधार मानकर प्रो॰ मैक्समूलर ने वेद-रचना का काल १२०० वर्ष ई॰ पूर्व माना। उन्होंने सम्पूर्ण वैदिक काल को चार भागों में विभक्त किया :

(क) १२०० ई॰ पूर्व से १००० ई॰पू॰—छन्दोकाल तथा प्रकीर्ण मन्त्रों का रचना-काल। इसी काल में ऋग्वेद की रचना हुई।

(ख) १००० ई॰पू॰ से ८०० ई॰पू॰—मन्त्र-काल। इस काल में मन्त्रों का संहिताओं के रूप में संकलन किया गया।

(ग) ८०० ई॰पू॰ से ६०० ई॰पू॰—ब्राह्मण-काल। ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना इसी अन्तराल में हुई।

(घ) ६०० ई॰पू॰ ४०० ई॰पू॰—सूत्रकाल। श्रौतसूत्रों और गृह्यसूत्रों की रचना इन्हीं २०० वर्षों में हुई।

यह मत कुछ समय तक बहुत प्रचलित रहा, किन्तु बाद में स्वयं इसके प्रस्तावक प्रो॰ मैक्समूलर ने ही इसे अमान्य कर दिया। बोघाजकोई से उपर्युक्त शिलालेख के प्राप्त होने पर तो यह बिल्कुल ही निरस्त हो गया।

2. लोकमान्य तिलक का मत

तिलक जी ने ज्योतिष के आधार पर वेद की रचना का सर्वप्राचीन काल ई॰पू॰ ६००० से ४००० ई॰पू॰ माना है। उन्होंने यह तिथि विभिन्न नक्षत्रों के वसन्त-सम्पात के आधार पर निश्चित की है तथा वेदकाल को चार भागों में विभक्त किया है :

(क) **अदिति-काल**—६००० ई॰पू॰ से ४००० ई॰पू॰। इस काल में निविद् मन्त्रों की रचना हुई।

(ख) **मृगशिरा-काल**—४००० से २५०० ई॰पू॰। ऋग्वेद के अधिकांश मन्त्र इसी युग में रचे गये।

(ग) **कृत्तिका-काल**—२५०० ई॰पू॰ से १५०० ई॰पू॰। चारों वेद-संहिताओं का संकलन और तैत्तिरीय संहिता तथा कुछ ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना इसी युग में हुई। मन्त्रों की रचना भले ही ६००० ई॰पू॰ में प्रारम्भ हो गई थी, किन्तु यज्ञों की दृष्टि से उनका परिष्कार और संग्रह इसी काल में हुआ।[११] वेदाङ्ग ज्योतिष की रचना भी इसी युग में हुई, क्योंकि इसमें सूर्य और चन्द्रमा के श्रविष्ठा के आदि में उत्तर की ओर घूम जाने का वर्णन है,[१२] जो गणना के अनुसार १४०० ई॰पू॰ की घटना है।

(घ) **अन्तिम काल**—१४०० ई॰पू॰ से ५०० ई॰पू॰। श्रौतसूत्रों, गृह्यसूत्रों तथा विभिन्न दर्शन-सूत्रों की रचना का यही काल है।

११. It was at this time that the Samhitas were probably compiled into systematic books and attempts made to ascertain the meaning of the oldest hymns and formulae—**The Orion,** page 207.

१२. प्रपद्येते श्रविष्ठादौ सूर्याचन्द्रमसावुदक्।
सार्पार्धे दक्षिणार्कस्तु माघ—श्रवणयोः सदा।।

अन्त में तिलक जी ने एक सुझाव दिया है कि यदि वेद का रचनाकाल ४००० ई.पू. मान लिया जाये तो भारतीय और पाश्चात्य मतों का समन्वय हो जायेगा।

तिलक की गणना-प्रक्रिया—ऋतुओं का आगमन सूर्य—संक्रमण पर आधृत है। ऋतुएँ निरन्तर पीछे हट रही हैं। पहले वर्ष का आरम्भ वसन्त से होता था। उस समय वसन्त-सम्पात (Vernal Equinox) क्रमशः उत्तरा भाद्रपद, रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा आदि नक्षत्रों में होता था, आज वह मीन की संक्रान्ति से आरम्भ होता है—यह संक्रान्ति पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण से आरम्भ होती है। धीरे-धीरे नक्षत्र एक के बाद एक के क्रम से पीछे हटे हैं। नक्षत्र २७ है और सूर्य का संक्रमण-वृत्त या राशिचक्र (Zodiac) ३६० डिग्री का है। अतः प्रत्येक नक्षत्र की दूरी (३६०÷२७) १३ डिग्री है। प्रत्येक नक्षत्र समयानुसार अपने स्थान से हटता रहता है। एक नक्षत्र को एक डिग्री पीछे हटने में ७२ वर्ष लगते हैं। इस प्रकार एक नक्षत्र को १३ डिग्री पीछे हटने में अर्थात् दूसरे नक्षत्र के स्थान पर पहुँचने में ९३६ वर्ष (७२×१३) लगते हैं। अतः लगभग १५०० वर्ष पूर्व कृत्तिका में वसन्त-सम्पात हुआ होगा।

लोकमान्य तिलक को ऋग्वेद में कुछ ऐसे मन्त्र[१३] मिले, जिनसे मृगशिरा नक्षत्र में वसन्त-सम्पात होने के संकेत प्राप्त होते हैं। यह वसन्त-सम्पात और आगे पुनर्वसु तक जाता है।[१४] मृगशिरा में कृत्तिका दो नक्षत्र पहले और पुनर्वसु के चार नक्षत्र पहले हैं। अतः मृगशिरा में वसन्त-सम्पात का समय कृत्तिका वाले समय से १९२४ (९६२×२) वर्ष पूर्व होगा। फलतः मृगशिरा में वसन्त-सम्पात होने का समय ४४४४ वर्ष ई॰पू॰ है। निष्कर्ष यह है कि वेदों की रचना लगभग ४५०० वर्ष पूर्व अर्थात् आज से ६५०० वर्ष पूर्व हुई होगी। यदि पुनर्वसु में वसन्त-सम्पात मानें तो लगभग २०० वर्ष और बढ़ जायेंगे।

3. शंकर बालकृष्ण दीक्षित का मत

दीक्षित जी ने शतपथ ब्राह्मण का एक अंश उद्धृत किया है, जिससे ज्ञात होता है कि उक्त ब्राह्मण के रचनाकाल में कृत्तिकाओं का उदय ठीक पूर्वीय बिन्दु पर होता था।[१५] इससे सूचना मिलती है कि कृत्तिका नक्षत्र अपने स्थान से ४ ३/४ नक्षत्र (भरणी, अश्विनी, रेवती और उत्तरा, भाद्रपद होते हुए) पीछे हट चुका है अतः कृत्तिका नक्षत्र में वसन्त-सम्पात सम्भवतः

---

१३. विशृंगिणमभिनच्छुष्णमिन्द्रा : — ऋ॰सं॰ १—३३—१२
युद्धः सत्यं मायिनं मृगम् — ऋ॰सं॰ १—८०—७।
शिरो नवस्य सविषम् — वही १०—८६—५।

१४. दस्रो यमोऽनलोब्रह्मा चन्द्रो रुद्रोऽदितिर्गुरुः।
क्रमानूक्षत्रदेवताः (लघुसंग्रह श्लोक ६१—६१)

१५. एकं द्वे त्रीणि चत्वारीति वा अन्यानि नक्षत्राणि, अथैता एवं भूयिष्ठा यत् कृत्तिकास्तद् भूमानमेव एतदुपैति, तस्मात् कृत्तिकास्वादधीत। एता हवै प्राच्यै दिशे न च्यवन्ते, सर्वाणिहवा अन्यानि नक्षत्राणि प्राच्यै दिशश्च्यवन्ते। ... २—१२)

Scanned with CamScanner

२५०० ई॰ पूर्व हुआ होगा, वही शतपथ ब्राह्मण का रचना काल है। चारों वेदों की रचना में एक सहस्र वर्ष और लगे होंगे। इस प्रकार ३५०० ई॰पू॰ में वेदों की रचना आरम्भ हुई होगी।

4. याकोबी का मत

शर्मण्यदेशीय वेदज्ञ याकोबी का आधार भी ज्योतिष शास्त्र ही है। उन्होंने गृह्यसूत्रों में, वैवाहिक संस्कार के प्रसंग में आये ध्रुव दर्शन कृत्य पर विचार करके अपना मत प्रकट किया कि लगभग ४५०० वर्ष ई॰पू॰ में ऋग्वेद की रचना हुई होगी। यह विस्मयोत्पादक साम्य है कि दो दूरस्थ विद्वान् एक ही शास्त्र के विभिन्न आधारों पर एक ही निश्चय पर पहुंचे। तिलक ने अपने ग्रन्थों में इस साम्य का उल्लेख किया है।

5. अविनाश चन्द्रदास का मत

डॉ॰ दास ने भूगर्भशास्त्र और भूगोलगत साक्ष्यों के आधार पर ऋग्वेद का रचनाकाल ईसा से २५ सहस्र वर्ष पूर्व निश्चित किया है। कुछ प्रमुख तथ्य ये हैं—(क) ऋग्वेद में सरस्वती नदी के समुद्र में मिलने का उल्लेख है—**'एकाचेतत् सरस्वती नदीनाम् शुचिर्यती गिरिभ्य आ समुद्रात्'** (ऋ.सं॰ ७-९५-२)। (ख) यह समुद्र राजस्थान में था। किसी बड़े भूकम्प के कारण समुद्र और सरस्वती दोनों विलीन हो गये। (ग) आर्यों के निवास-स्थान सप्तसैन्धव प्रदेश के चारों ओर चार समुद्र थे। पूर्वी समुद्र वहाँ था, जहाँ आज उत्तर प्रदेश और बिहार हैं; पश्चिमी समुद्र आज भी वहीं है, उत्तरी समुद्र उत्तर में था—आज का 'कैस्पियन' समुद्र उसी का अवशेष है; दक्षिणी समुद्र राजस्थान में था। (घ) गंगा-प्रदेश हिमालय की तलहटी तथा असम के पर्वतीय प्रदेश समुद्र के अन्दर थे। (ङ) भूगर्भशास्त्रियों के अनुसार यह स्थिति ईसा से ५० हजार वर्ष से लेकर २५ हजार वर्ष पहले थी।

6. महर्षि दयानन्द सरस्वती का मत

आर्य-समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द के अनुसार वेदों का उद्‌गम परमात्मा से हुआ। अतः जिस दिन सृष्टि आरम्भ हुई, उसी दिन वेदों का भी आविर्भाव हुआ। भारतीय ज्योतिष के अनुसार वर्तमान सृष्टि १९५५८८५०८६ वर्ष पहले हुई थी। अतः यही वेदोत्पत्ति काल भी है।

7. विण्टरनित्स का मत

वैदिक काल २५०० ई॰पू॰ से ५०० ई॰पू॰ तक माना जा सकता है। पं॰ दीनानाथ शास्त्री चुलेट ने भी ज्योतिष के आधार पर वेद का रचना-काल आज से तीन लाख वर्ष प्राचीन माना है।

मैक्डॉनेल ने ऋग्वेद की रचना ईसा से १३०० वर्ष पहले बतलाई है। उसी समय भारतीय आर्य और ईरानी आर्य अलग-अलग हुए।

Scanned with CamScanner

8. डॉ॰ भाण्डारकर का मत

ईशावास्य उपनिषद् में आए 'असुर्या' शब्द को डॉ॰ भाण्डारकर ने वर्तमान 'असीरिया' का समानार्थक प्रमाणित किया है। असीरिया (मेसोपोटामिया) के निवासी ही वेदों में उल्लिखित असुर हैं। लगभग २५०० वर्ष ई॰पू॰ में ये भारत में प्रविष्ट हुए। उसी आधार पर ऋग्वेद का रचनाकाल ६००० ई॰पू॰ माना जा सकता है।

9. अमलनरेकरं का मत

इतिहासज्ञ एच॰जी॰ वेल्स ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'आउटलाइन्स ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री' में २५००–५०००० वर्ष पूर्व के विश्व की रूपरेखा प्रस्तुत की है। इसी आधार पर अमलनरेकर ने ६६०००–७५००० वर्ष पहले ऋग्वेद का रचनाकाल बतलाया है।

उपर्युक्त मतों की बड़ी संख्या से यह स्पष्ट है कि प्रयासों की इस संकुलता के विपरीत वेदों की रचना का काल अभी तक अनिर्णीत ही है। सम्प्रति यह प्रश्न केवल वैदिकों तक ही सीमित नहीं है; पुरातत्त्व, मानवशास्त्र एवं भूगर्भ-विज्ञान की नई शोधों के आयाम भी इससे जुड़े हैं। यद्यपि यह सही है कि वेदानुशीलियों के समक्ष प्रामाणिक साक्ष्यों का अभाव दुर्भेद्य चट्टान बनकर खड़ा है, किन्तु यह भी निश्चित है कि शीघ्र ही किसी दिन वेदों के अध्येता इस समस्या को सुलझाकर ही रहेंगे।

Scanned with CamScanner